International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(2): 69-71

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(2): 69-71
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-02-2016
Accepted: 22-03-2016

पूनम साहू
शोध छात्रा संस्कृत दर्शन
एवं वैदिक अध्ययन विभाग
वनस्थली विद्यापीठ

Correspondence
पूनम साहू
शोध छात्रा संस्कृत दर्शन
एवं वैदिक अध्ययन विभाग
वनस्थली विद्यापीठ

जयोदय महाकाव्य में गृहस्थ धर्म

पूनम साहू

सारांश
प्राचीन काल से ही भारत भूमि पर अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया। इन महापुरूषों ने भारत में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं शौर्य के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। रामायण, महाभारत और पुराण वाङ्मय के आख्यान–उपख्यानों की रोचकता तथा रसात्मकता की अपूर्वता से प्रतिभा सम्पन्न विद्वान और साहित्यिक अति प्राचीन काल से प्रभावित हो रहे हैं। इस प्राचीन इतिहास पुराणात्मक वाङ्मय का दृढ़ परिशीलन तथा व्याकरण, छन्दशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजनीति शास्त्र, कामशास्त्र, आध्यात्मिक विद्या का महान् अध्ययन कर साहित्यिकारों ने विविध प्रकार की रचना की है। आचार्य भूरामल शास्त्री ने जिनसेन के महापुराण को आधार मानकर ''जयोदय'' नामक विशाल महाकाव्य की रचना की है। जयोदय महाकाव्य आचार्य भूरामलशास्त्री द्वारा रचित महाकाव्य है। जयोदय महाकाव्य जैन धर्म पर आधारित महाकाव्य है। जयोदय महाकाव्य 28 सर्गों में निबद्ध है। जयोदय महाकाव्य में कवि भूरामलशास्त्री का गृहस्थ धर्म के प्रति सहज अनुराग देखने को मिलता है। जयोदय महाकाव्य में स्थान–स्थान पर चारों आश्रमों का वर्णन किया है। किन्तु द्वितीय सर्ग में कवि ने गृहस्थ के धर्म व कर्त्तव्य का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है यहाँ कवि का गृहस्थ धर्म के प्रति सहज अनुराग देखने को मिलता है। जयोदय महाकाव्य में कवि ने मुनिराज के मुख से गृहस्थाश्रम का उपदेश कराया है जो अत्यन्त मनोहारी व हितकारी है।

अतः प्रस्तुत महाकाव्य में गृहस्थ धर्म का विवेचन करना शोध पत्र का उदेश्य है।

जयोदय महाकाव्य में गृहस्थ धर्म

प्राचीन काल से ही भारत भूमि पर अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया। इन महापुरूषों ने भारत में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं शौर्य के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। रामायण, महाभारत और पुराण वाङ्मय के आख्यान–उपख्यानों की रोचकता तथा रसात्मकता की अपूर्वता से प्रतिभा सम्पन्न विद्वान और साहित्यिक अति प्राचीन काल से प्रभावित हो रहे हैं। इस प्राचीन इतिहास पुराणात्मक वाङ्मय का दृढ़ परिशीलन तथा व्याकरण, छन्दशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजनीति शास्त्र, कामशास्त्र, आध्यात्मिक विद्या का महान् अध्ययन कर साहित्यिकारों ने विविध प्रकार की रचना की है। आचार्य भूरामल शास्त्री ने जिनसेन के महापुराण को आधार मानकर ''जयोदय'' नामक विशाल महाकाव्य की रचना की है। जयोदय महाकाव्य आचार्य भूरामलशास्त्री द्वारा रचित महाकाव्य है। जयोदय महाकाव्य के अतिरिक्त आपके द्वारा वीरोदय, सुदर्शनोदय आदि अन्य महाकाव्य रचे गये हैं। जयोदय महाकाव्य जैन धर्म पर आधारित महाकाव्य है। जयोदय महाकाव्य 28 सर्गों में निबद्ध है।

जयोदय महाकाव्य में कवि भूरामलशास्त्री का गृहस्थ धर्म के प्रति सहज अनुराग देखने को मिलता है। गृहस्थों के कर्त्तव्य व धर्म को जानने से पहले ''वर्णाश्रम'' के अर्थ को जानना अत्यन्त आवश्यक है। ''वर्णाश्रम'' शब्द में वर्ण तथा आश्रम दो शब्द गुथे हैं। वर्ण और आश्रम प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था के दो मूलाधार थे। मनुष्य के गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर चार वर्णों की व्यवस्था की गई थी और मनुष्य के व्यक्तिगत संस्कार के लिए जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया गया है। ये चार आश्रम, ब्रह्म चर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास। आश्रम शब्द श्रम् धातु से बना है जिसका अर्थ है श्रम करना अथवा पौरूष दिखलाना।

जयोदय महाकाव्य में स्थान–स्थान पर चारों आश्रमों का वर्णन किया है। किन्तु द्वितीय सर्ग में कवि ने गृहस्थ के धर्म व कर्त्तव्य का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है यहाँ कवि का गृहस्थ धर्म के प्रति सहज अनुराग देखने को मिलता है। जयोदय महाकाव्य में कवि ने मुनिराज के मुख से गृहस्थाश्रम का उपदेश कराया है जो अत्यन्त मनोहारी व हितकारी है।

कवि ने कहा है कि वंश–निर्माताओं ने कुलों का निर्माण कर उन कुलों के लिए यह अवश्य कर्त्तव्यनिर्दिष्ट किया है। अतः अपने कुल की मर्यादा में स्थित मनुष्य उसका अवश्य आचरण करें। उसी का नाम सदाचार है।

सन्निवेद्य च कुलङ्करैः कुलान्यतदारणामिङ्गितं बलात।
आचरेत् स्वकुलसक्तिमानियद्वर्त्म सद्भिरूपतिष्ठितं हियत्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/8)

कवि उत्तम विचार वाले दृढ़चित्त लोगों को दैव का स्मरण करने के लिए कहता है –

सम्मता हि महतां महान्वयाः संस्मरन्तु निर्यातं दृढाशयाः।
आत्रिकेष्टिनिरता पुनर्नवा नान्नतो हि परिपोषणं गवाम्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/11)

अर्थात् महापुरूषों से मान्य और उत्तम विचारवाले दृढ़चित लोग दैव का स्मरण करें। किन्तु गृहस्थ व्यावहारिक नीति ही स्वीकार करते हैं। क्योंकि गायों का पोषण केवल अन्नमात्र से नहीं होता बल्कि घास की भी आवश्यकता होती है। गृहस्थों के लिए आवश्यक है जिनके लिए जो उपयोगी हो वहाँ उसी को प्रयोग में लायें –

लोकवर्त्मनि सकावशस्यवन्निष्ठितेऽरमहितेष्टिदस्यवः।
स्थोचितं प्रति चरन्तु सम्पदं सर्वमेव सकलस्य नोषधम्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/17)

अर्थात् कंकर सहित धान्य के समान लौकिक मार्ग में अपना हित चाहने वाले पुरूषों को उचित है कि जो बात जिनके लिए जहाँ उपयोगी हो, वहाँ उसी को प्रयोग में लायें, क्योंकि सभी औषधियाँ सबके लिए उपयोगी नहीं होती। गृहस्थों को पुरूषार्थ का पालन करते हुए जीवन का निर्वाह करना चाहिए –

यातु कामधनधर्मकर्मसु सत्सु सम्प्रति मिथोऽपशर्मसु।
तानि तावदनुकूलयन् बलात् कर्दमे हि गृहिणोऽखिलाञ्चलाः।।
(जयोदय महाकाव्य 2/19)

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम ये तीनों गृहस्थ के करने योग्य पुरूषार्थ हैं जो एक साथ परस्पर विरूद्धता लिए हुए हैं। गृहस्थ उनको अपनी बुद्धिमता से परस्पर अनुकूल करते हुए बर्ताव करें। अन्यथा गृहस्थी के चारों पल्ले कीचड़ में हैं अर्थात् उसका कोई भी काम नहीं चल सकता। गृहस्थ को ही धर्मादि त्रिवर्ग का संग्राहक कहा गया है –

गेहमेकमिह भुक्तिभाजनं पुत्र तत्र धनमेव साधनम्।
तच्च विश्वजनसौहृदाद् गृहीति त्रिवर्गपरिणाम संगृही।।
(जयोदय महाकाव्य 2/21)

अर्थात् संसार में एकमात्र घर ही गृहस्थ के लिए भोगों का समुचित स्थान है। उस भोग का साधन धन है। वह धन जनता से मेल–जोल रखने पर प्राप्त होता है। गृहस्थ को प्रातः काल के समय देवपूजन कार्य करना चाहिए –

प्रातरस्तु समये विशेषतः स्वथिताक्षमनसः पुनः सतः।
देवपूजनमनर्थसूदनं प्रायशो मुखमिवाप्यते दिनम्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/23)

अर्थात् प्रातः काल के समय गृहस्थ का मन और इन्द्रियाँ प्रसन्न रहती हैं अतः उस समय प्रधानतया सब अनर्थों का नाश करने वाला देवपूजन करना चाहिए ताकि सारा दिन प्रसन्नता से बीतें। दिन के प्रारंभ में जैसा शुभ अशुभ कर्म किया जाता है वैसा ही सारा दिन बीतता है। यह महाकाव्य जैन धर्म पर आधारित है इसलिये गृहस्थों के लिए अरहंत देव की पूजा पर बल दिया गया है–

सर्वतः प्रथममिष्टिरर्हतो देवतास्वापि च देवतायतः।
मङ्गलमशरण्यतां श्रितो देहिनां तदितरोऽस्तु को हितः।।
(जयोदय महाकाव्य 2/27)

अर्थात् गृहस्थों को सर्वप्रथम भगवान् अरहंत देव की पूजा करनी चाहिए क्योंकि वे ही भगवान् अरहंत मंगलों में उत्तम और शरणागत वत्सल हैं। देवताओं में श्रेष्ठ हैं। उनके समान शरीर धारियों का हित करने वाला दूसरा कोई नहीं है। गृहस्थों को सदैव जिन भगवान का स्मरण करना चाहिए। कवि ने गृहस्थों को शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए कहा है –

सम्पठेत् प्रथमतो ह्युपासकाधीतिगीतिमुचितात्मरीतिकम्।
अज्ञता हि जगतो विशोधने स्यादनात्मसदनावबोधने।।
(जयोदय महाकाव्य 2/45)

अर्थात् गृहस्थ व्यक्ति को चाहिए कि वह सबसे पहले जिसमें अपने आप के करने योग्य कुलागत रीति–रिवाजों का वर्णन हो, ऐसे शास्त्रों का ही अध्ययन करें। क्योंकि अपने घर की जानकारी न रखते हुए दुनिया को खोजना अज्ञता ही होगी।
गृहस्थों को उत्तम व्याकरण शास्त्र, अलंकारशास्त्र और छन्दः शास्त्र जो कि परस्पर वाच्य वाचक के समन्वय को लिये हुए होते हैं और जो वाङ्मय के नाम से कहे जाते हैं। उनका अच्छी तरह से अध्ययन करना चाहिए –

व्याकृतिं शुचिमलङ्कृतिं पुनश्छन्दसां ततिमितित्रयंजनः।
साभिधेयमाभिधानमन्वयप्रायमाश्रतु तद्वि वाङमय्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/55)

कवि ने निम्न श्लोक में गृहस्थ धर्म द्वारा विजय प्राप्त करने का उपदेश दिया है –

दानमानविनयैर्यथोचितं तोषयन्निह सधर्मिसंहतिम्।
क्रत्यकृद्विमतिनोऽनुकूलयन् संलभेत गृहितधर्मतोजयम्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/72)

अर्थात् भूतल पर अपने किसी भी अभीष्ट कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए मनुष्य को चाहिए कि यथायोग्य दान–सम्मान और विनय द्वारा न केवल समानधर्मी लोगों को सन्तुष्ट रखें, बल्कि विधर्मी लोगों को भी अपने अनुकूल बनाये रखें और इस तरह अपने गृहस्थ धर्म से विजय प्राप्त करें। कवि ने गृहस्थों के गुणों को निम्न श्लोक में दर्शाया है –

धीमता ह्रदयशुद्धये सताऽऽस्तिक्यभक्तिधृति सावधानता।
त्यागिताऽनुभविता कृतज्ञता नैष्प्रतीच्छयमितिचोपलभ्यताम्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/74)

अर्थात् बुद्धिमान को चाहिए कि अपने अंतर को शुद्ध रखने के लिए अस्तिक्य, गुणों में अनुराग, धृति, सावधानता, त्यागिता, अनुभाविता, कृतज्ञता और नैष्प्रतीच्छाय आदि गुणों को प्राप्त करना चाहिए।
कवि ने गृहस्थों के लिए सदाचार को ही प्रथम धर्म बताया है –

भावनाऽपि सदावानाय ना किन्तु भोगविनियोगभृन्मनाः।
आचरेत् सदिह देशना कृता श्रीमता प्रथमधर्मता मता।।
(जयोदय महाकाव्य 2/75)

अर्थात् भावना की पवित्रता सदा कल्याण के लिए कही गयी है फिर भी भोगाधीन मन वाले गृहस्थ को चाहिए कि वह सदाचार का अवश्य ध्यान रखें अर्थात् भले पुरूषों को अच्छी लगन वाली चेष्टा व आचरण करें। क्योंकि देशना करने वाले भगवान् सर्वज्ञ ने सदाचार को ही प्रथम धर्म बताया है।

जयोदय महाकाव्य में कवि ने कहा है कि गृहस्थों को अपने झूठे बरतन आदि को यथोचित रीति से भस्म द्वारा माँजकर शुद्ध कर लेना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वेदी के लिम्पन आदि कार्यों में गोमय का उपयोग करें। गोमय पशु की विष्ठा है ऐसा समझकर उसे अस्पृश्य न समझे –

शोधयन्तु सुधियो यथादितं वर्तनादि परिणामतो हितम्।
भस्मना किममुना परिष्कृतं धान्यमस्त्यधुणितं न साम्प्रतम्।।
गोमयेन खलु वेदिलिम्पनप्रायकर्मलभतामितोजनः।
नास्तु पाशविकविट्तयाऽन्वयःकिन्तु गव्यमिव चाविकं पयः।।
(जयोदय महाकाव्य 77,78)

यहाँ पर गाय पशु को पवित्र माना है कवि ने लोक का गुरू लोक ही है इस प्रकार माना है –

यत्वनिष्टतमृषिभिर्निषेधितं देशितं हृदयहारवद्धितम्।
अन्यदप्यनुमतादुरीकुरू लोक एव खलु लोक संगुरूः।।
(जयोदय महाकाव्य 2/90)

अर्थात् ऋषियों ने जिसका निषेध किया है वह हमारे जीवन के लिए अनिष्टकर है। और जिसका उन्होंने विधान किया है वह हृदय के हार ही तरह हमारे लिए उपयोगी है। इसके अतिरिक्त जो सज्जनों द्वारा सम्मत हो उसे स्वीकार करना चाहिए।

कवि ने गृहस्थ के धर्मकार्यों में सबसे प्रमुख दान को माना है –

मिष्टभाषणपुरस्सरं यथा स्वं सदन्नजलदानसम्पथा।
संविसर्जनमथागतस्य तु धर्मकर्माणि मुखं गृहीशितुः।।
(जयोदय महाकाव्य 2/92)

अर्थात् मधुर संभाषणपूर्वक अपनी शक्ति के अनुसार योग्य अन्न और जल का दान करना चाहिए और अपने घर पर आये अतिथि को प्रसन्न करके भेजना चाहिए। गृहस्थ भोजन, वस्त्र, पात्रादि उपकरण औषधी और शास्त्र का दान करता रहे। क्योंकि यतियो का गुण तो विनयादि गुणों से ही प्राप्त होता है। कवि ने गृहस्थ को अपने कुल का सुख पूर्वक निर्वाह करने लिए कहा है। –

स्वान्वयस्य सुखस्थितिर्भवेत् सन्निराकुलमतिः स्वयं भवे।
सर्वमित्थमुचिताय दीयतां हीङ्गित स्वपशर्मणेसताम्।।
(जयोदय महाकाव्य 2/104)

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि अपने कुल का सुख से निर्वाह होता रहे और स्वयं इस संसार में निराकुल होकर परमात्मा की आराधना कर सके, यह ध्यान में रखकर जीवनभर सुयोग्य पुरूष के लिए अपना सब कुछ देता रहे।

गृहस्थ को चाहिए अपना तो यश हो और पूर्वजों की याद बनी रहे तथा सर्वसाधारण में सद्भावना की जागृति हो इसके लिए जिन मंदिर, धर्मशाला आदि परोपकार के अनेक साधान भी जुटाता रहे जिससे सन्मार्ग की प्रतिष्ठा बनी रही। –

स्वं यशोऽगृजननामसंस्मृतिरित्यनेकविधकारणोद् धृतिः।
कल्प्यतां भविषु भावनोऽच्छ्रितिस्तावतैव हि पथः प्रतिष्ठितः।।
(जयोदय महाकाव्य 2/105)

कवि ने गृहस्थों के लिए कहा है कि गृहस्थ आश्रम व वर्ण व्यवस्था के नियमों का उल्लंघन न करें। –

स्वान्वयकर्मकृदस्मादस्तु समारब्धपापपथभस्मा।
कव्चिदाश्रमे समुचिते निरतोऽसावात्मने रूचिते।।
(जयोदय महाकाव्य 2/116)

अर्थात मनुष्य को चाहिए कि वह अपने कुलक्रम से आयी हुई आजीविका को चलाता रहे और पाप–पाखण्ड से बचता रहे एवं जैसा अपने आपको अच्छा लगे उसी समुचित आश्रम में निरत रहकर अपना जीवन बिताये। गृहस्थ को अनेक बुरे कार्यों को त्याग देना चाहिए –

होढ़ाकृतं धूतमथाह नेता संक्लोशितोऽस्मिन्विजितोऽपिजेता।
नानाकुकर्माभेरूचिं समेति हे भव्य दूरादमुकं त्यजोति।।
(जयोदय महाकाव्य 2/127)

अर्थात् मनुष्य को जुआ खेलना, मांस खाना मदिरा पान, पर स्त्री सङ्गम, वेश्यागमन, शिकार और चोर तथा नास्तिकता इन सबको त्याग देना चाहिए।

इस प्रकार अन्त में कहा जा सकता है कि आचार्य भूरामलशास्त्री ने गृहस्थ धर्म का पालन करने पर बल दिया है। जयोदय महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में गृहस्थ धर्म के कर्त्तव्यव नियमों का समुचित वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक संस्कृत साहित्यःहीरालाल शुक्ल, रचना प्रकाशन, खुल्दाबाद, इलाहाबाद, संस्करण–1971
2. जनरल नॉलेज एनसाइक्लोपीडियाःशिवगोपाल मिश्रा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2011
3. जयोदय महाकाव्यःसम्पादक पं. हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री, प्रकाशक श्री दिगम्बर जैन समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज, अजमेर (राजस्थान), प्रकाशन वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 1994
4. जैन धर्म का मौलिक इतिहासःलेखक आचार्य हस्तिमलजी महाराज, जैन इतिहास समिति, जयपुर (राज.)
5. जैन भारतीःगणिनी आर्यिका, श्री ज्ञानमती माता जी, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर, मेरठ
6. जैन संस्कृत महाकाव्यःडॉ. सत्यव्रत, जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूँ, नागौर, 1989
7. जैन संस्कत महाकाव्यों में भारतीय समाजःडॉ. मोहन चन्द्र, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1989
8. जैन साहित्य का वृहद् इतिहासःलेखक डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1973
9. धार्मिक तत्वःज्वाला प्रसाद सिंघल, सद्ज्ञान सदन, अलीगढ़